चिंतन :

राजेन्द्र माथुर

महापुरुष का महान गुण उनकी समानता नहीं है, उनकी विविधता है। हर लेखक तब बड़ा बनता है, जब वह अलग सोचता है। न्यूटन का खंडन करके आइन्स्टाइन महान बने। नेता तब बड़ा बनता है जब वह प्रस्तुत चुनौती का ऐसा कोई हल खोज निकालता है, जो नितान्त मौलिक हो या लीक से हट कर हो। गाँधीजी किसी के रास्ते पर नहीं चले, इसलिये वे महान थे। वे चलते भी किसके रास्ते पर ? उनके पहले देश में राजनैतिक काम की परम्परा ही नहीं थी। गाँधीजी महान इसलिये नहीं थे कि उन्होंने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का उच्चारण किया। वे महान इसलिए थे कि उन्होंने राजनीति-विहीन देश को पहल बार राजनीति दी। यह काम कुल मिलाकर उतना ही कठिन था, जितना कि चांद के ऊपर हवादार वातावरण पैदा करना कठिन होगा। गाँधी नामक वैज्ञानिक ने भारत के चांद को वह वातावरण दिया, जिसमें आज हम सांस ले रहे हैं।

गाँधी अपनी फ्रेम में कैद नहीं रहे

साहित्य में जो बात सबको मालूम है, वह राजनीति में बहुत कम जानते हैं। हर बड़ा लेखक और हर बड़ा नेता अपने युग की उपज होता है। युग के मुहावरों में वह बोलता है और युग की चुनौती का सामाना करता है। वह अमर इसलिये है कि वह युगीन है। महानता को देशकाल से अलग करके देखना वैसा ही है, जैसे ध्वनि को माध्यम से अलग करके आंकना। महात्मा गाँधी भी महापुरुष इसलिए थे कि उन्होंने अपने युग को वाणी दी। वे युगीन थे, इसीलिये उन्होंने युग को हिला दिया और युगान्तर कर दिया। वे युगीन थे, इसलिये उनकी महानता युग की दीवारों को तोड़ कर अमर हो चुकी है। गाँधी अमर हैं, इसका मतलब यह नहीं कि वे कोई दवाई की पुड़िया हैं, जिसे किसी भी युग और किसी भी परिस्थिति में जनता घोलकर खा ले, तो वह चंगी हो जाएगी। लेकिन अगर ऐसा कोई स्वर्ग हो, जहां अतीत की प्रेरक परम्पराएं सशरीर मौजूद रहती हो, तो गाँधीजी उस स्वर्ग में निश्चय ही अमर सिंहासन पर विराजमान है।

यों कहने को कहा जा सकता है कि आर्किमीडीस के रास्ते पर चल कर आइजक न्यूटन पैदा हुए और न्यूटन का अनुकरण करके आइन्स्टाइन हुए। टब में नहाते-नहाते एक को आपेक्षिक घनत्व का सिद्धांत सूझ गया और सेब का गिरना देखकर दूसरे ने गुरूत्वाकर्षण खोज लिया। भारतवासी सोचता है कि ये सब एक ही हस्ती के अवतार थे। लेकिन यह धारणा गलत है। महापुरुष का महान गुण उनकी समानता नहीं है, उनकी विविधता है। हर लेखक तब बड़ा बनता है, जब वह अलग सोचता है। न्यूटन का खंडन करके आइन्स्टाइन महान बने। नेता तब बड़ा बनता है जब वह प्रस्तुत चुनौती का ऐसा कोई हल खोज निकालता है, जो नितान्त मौलिक हो या लीक से हट कर हो। गाँधीजी किसी के रास्ते पर नहीं चले, इसलिये वे महान थे। वे चलते भी किसके रास्ते पर ? उनके पहले देश में राजनैतिक काम की परम्परा ही नहीं थी। गाँधीजी महान इसलिये नहीं थे कि उन्होंने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का उच्चारण किया। वे महान इसलिए थे कि उन्होंने राजनीति-विहीन देश को पहल बार राजनीति दी। यह काम कुल मिलाकर उतना ही कठिन था, जितना कि चांद के ऊपर हवादार वातावरण पैदा करना कठिन होगा। गाँधी नामक वैज्ञानिक ने भारत के चांद को वह वातावरण दिया, जिसमें आज हम सांस ले रहे हैं।

और यह गाँधी का रास्ता कौन सा है, जिस पर चलने को हमें कहा जाता है? एक जमाना था जब गाँधी ने लिखा था कि रेल से यात्रा करते समय उन्हें लगता है कि वे किसी यंत्र-पिशाच के हाथों खेल रहे हैं। लेकिन रेल से गाँधी ने समझौता कर लिया। उनका तीसरे दर्जे का डिब्बा स्पेशल ट्रेन बन कर जाने

लगा। असहयोग के दिनों में गाँधी की बहुचर्चित पुस्तक हिन्द स्वराज थी। इस किताब में गाँधी ने लिखा है कि भारत की अधोगति के प्रमुख कारण हैं रेल, अस्पताल और अदालतें। अगर भारत की सरकारें उस रास्ते पर चलें, तो उन्हें बीसवीं शताब्दी के कल्याणकारी राज्य का सारा तामझाम खत्म कर देना होगा। लेकिन क्या 1948 का गाँधी भी रेल और अस्पताल का विरोधी था? गाँधी ने कहा था कि अगर भारत तलवार के रास्ते चला तो मैं उसका विरोध करने वाला पहला व्यक्ति होऊंगा। लेकिन आज के भारत ने क्या तलवारों का लोहा गलाकर ट्रेक्टर बना लिए हैं? जिस गाँधी ने सलाह दी थी कि हिटलर यदि कत्लेआम करे, तो लोगों को खामोशी से लाखों की तादाद में मर जाना चाहिए और इस प्रकार अन्यायी का हृदय परिवर्तन करना चाहिए, उसी गाँधी ने काश्मीर में भारतीय सेना भेजने का विरोध नहीं किया। गाय की पूजा करने वाले गाँधी ने जब अपने आश्रम के बछड़े को दर्द से बुरी तरह छटपटाते देखा, तो उन्होंने उसके त्वरित अन्त की सलाह दी और अभूतपूर्व ममता दर्शाई। क्या गाँधी के रास्ते पर चलकर हम आदमी के साथ भी ऐसा कर सकते हैं।

गाँधी पकड़ में नहीं आते। उनका जीवन कट्टर सिद्धांतवाद और तात्कालिक सुविधा का ऐसा अजब मिश्रण है कि आश्चर्य होता है। इसलिए अंग्रेज सदा शंका करते रहे कि उनमें साधुता कम और ढोंग अधिक है। वे गलत थे। लेकिन गाँधी पकड़ में इसलिए नहीं आते कि उनकी दृष्टि सिर्फ दो बातों पर केन्द्रित रहती थी। एक तो उनकी आत्मा और दूसरे उनका अगला कदम। नेहरु की तरह कोई विश्वव्यापी संदर्भ नहीं, कोई विचारधारा का परिप्रेक्ष्य नहीं। इतिहास के देवता का मौन निमंत्रण नहीं। यह ख्याल कतई नहीं कि किसी सुदूर क्षितिज तक पहुंचने के लिए अगला कदम उठाना है। नेहरु की तरह ऐसा कोई पक्का इरादा नहीं कि आजादी के बाद भारत की शक्ल क्या होगी। बस, केवल अगला कदम, गाँधी का ईमान और उनका अगला कदम। कई बार यह अगला कदम उनके शिष्यों को दुखी और दिग्भ्रमित कर देता था। वे समझ नहीं पाते थे कि यह आदमी गलत कैसे मुड़ गया। इसे मंजिल का भान क्यों नहीं है? यह हमें ले कहाँ जा रहा है? लेकिन न जाने कैसे जब गाँधी अगला कदम उठाते थे, तब वे गन्तव्य का रव सुन लेते थे। कोई रडार यंत्र उनके मस्तिष्क में था, जो क्षितिज के कम्पन उन तक पहुंचाता था और मुड़ने तथा रास्ता बदलने की प्रेरणा देता था। जैसे कोई बूंद में समुद्र के या अणु में ब्रह्माण्ड के दर्शन कर ले, वैसे ही गाँधी अगले कदम में सारी लम्बी यात्रा के दर्शन कर लेते थे। हर कदम ही उनके लिए मंजिल था, क्योंकि हर कदम आपको कहीं पहुंचाता ही है। गाँधी के इसी दर्शन ने साधन और साधन का द्वन्द समाप्त कर दिया। पहुंचना नहीं, बल्कि सही रास्ते चलना महत्वपूर्ण हो उठा।

लेकिन ईमान और अगले कदम का यह समीकरण गाँधी से छोटे नेता ने जब भी बैठाया है, तब सारी चीज एक तमाशा बन गई है। 1947 के बाद जितने सत्याग्रह, अनशन, धरने, आत्मदाह (या उनकी धमकियां) आदि हुए हैं, वे या तो हास्यास्पद रहे या दर्दनाम। गाँधी के रडार यंत्र के बिना, गाँधी जैसी ईमान की इलेक्ट्रॉनिक मशीन के बिना गाँधीवाद के प्रयोग होने मुश्किल हैं। कौन सा वह रडार यंत्र था और कौन सी वह ईमान की कसौटी थी, यह अगली कई शताब्दियों तक खोज का विषय बना रहेगा।

बाकी जो है, वह गाँधी नहीं है। गाँधी जो बोले वह गाँधी नहीं है। गाँधी ने जो लिखा, वह गाँधी नहीं है। गाँधी (कौन जाने) इनसे मुकर सकते थे। कई बार वे मुकरे भी। हम क्यों उससे बंधे रहें? 1931 में जो गाँधी के लिए अगला कदम था, वह 1969 में हमारे लिए अगला कदम क्यों हो? गाँधी ने जो लिखा और बोला, वह हमें गाँधी को समझने में सहायक अवश्य है। वह हमें बताता है कि गाँधी कैसे युगीन थे और कैसे युगान्तकारी थे। कैसी उनकी फ्रेम थी और कैसे उन्होंने फ्रेम से विद्रोह किया। लेकिन हमारी फ्रेम अलग है और हमारा विद्रोह भी अलग होगा।

प्रस्तुति : डॉ. सरोज कुमार,
मनोरम, 37, पत्रकार कॉलोनी, इन्दौर
मो. : 094066 22290

❁❁

(यह लेख 'नईदुनिया' इन्दौर में 09 फरवरी 1969 को प्रकाशित हुआ था।)

वरिष्ठ कवि बालकवि बैरागी का जीवन-संघर्ष एवं कुछ गीत-कविताएँ...

रिसर्च लिंक परिवार की ओर से जन्मदिन की हार्दिक बधाइयाँ.....

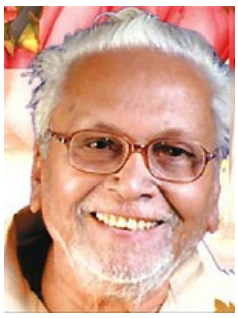

नाम - **बालकवि बैरागी**
(जन्म नाम - नन्दरामदास बैरागी)
पिता का नाम - स्व.श्री द्वारिकादास जी बैरागी
(जन्म से अपाहिज एवं लाचार)
माता का नाम - स्व. श्रीमती धापूबाई बैरागी
जन्म तारीख - 10 फरवरी 1931
निवास एवं पता - पूर्व सांसद लोकसभा 1984-1989, राज्यसभा 1998-2004
कवि नगर, पोस्ट-मनासा, जिला-नीमच (मध्यप्रदेश)
मोबाइल नंबर - 94251-06136

जीवन संघर्ष -

मैं एक अत्यंत विपन्न, गरीब और भिखारी परिवार में पैदा हुआ। ईश्वर ने मुझे सबसे बड़ा बेटा बनने का 'रुतबा' दिया। जीवन के 24 वर्षों तक मैं स्वयं, मेरी माँ, मेरी छोटी बहन और आजन्म अपाहिज और लाचार पिता, गाँव-गाँव, गली-गली, घर-घर, दर-दर, टुकड़ा-टुकड़ा रोटी, मुट्ठी-मुट्ठी आटा, अनाज, वस्त्र आदि भीख में माँग-माँग कर अपना परिवार चलाते थे। मैं सन् 1952 से ही खादी पहनता हूँ। अपने भिखरी बचपन को मैं भूल नहीं जाऊँ, इसलिए आज भी अपने शरीर पर पहनने वाले वस्त्र 'माँग कर' ही पहनता हूँ। मिक्षों से खादी माँगने में मुझे कोई संकोच नहीं है। मेरी माँ निरक्षर थी, किन्तु अपढ़ नहीं थी। मैं सचमुच अपनी माँ का निर्माण हूँ। मेरा साराशिक्षण भीख माँग-माँग कर ही पूरा हुआ। एम.ए. तक करने में मुझे 33 वर्ष लगे। गरीबी और संघर्ष ने कदम-कदम पर बाधाएँ दी।

■ देश के सभी हिन्दी अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं में कविताएँ, लेख, संस्मरण, कहानियाँ, टिप्पणियाँ प्रकाशित।

■ आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा अन्य टी.वी.चैनल्स पर लगातार आमंत्रित और प्रदर्शित।

■ छोटी-बड़ी कुल 26 फिल्मों में गीत-लेखन।

■ पत्रकारिता के क्षेत्र में सर्वत्र सम्मानित।

■ पिछले 60 वर्षों में सैकड़ों सम्मानों और पुरस्कारों द्वारा पूरे देश में अलंकृत।

■ हिन्दी राष्ट्रभाषा और राजभाषा के विनम्र सेवक के तौर पर देश-विदेश में पहचाना जाने वाला कवि। भारत की सभी प्रादेशिक भाषाओं के प्रति विनीत भाव से समर्पित।

■ पारिवारिक संघर्षों और भिखारी जीवन जीते हुए मैं स्वतंत्रता संग्राम का सिपाही नहीं बन सका, इसका मलाल आज तक पाल कर, आँखें पोंछ लेता हूँ। भयंकर गरीबी और संघर्षों से जूझता रहा।

■ साहित्य मेरा धर्म है - राजनीति मेरा कर्म। अपने धर्म और कर्म की शुचिता का मुझे पूरा ध्यान नहीं है।

■ मैं बाँये हाथ से लिखता हूँ। ईश्वर और सरस्वती ने मुझे बाँये हाथ में कलम और पं.जवाहरलाल नेहरु ने मेरे दाहिने हाथ में तिरंगा थमाया है, जो शहीदों के रक्त से रंगा है। मैं दोनों की गरिमा पर दाग़ नहीं लगने दूँगा।

■ गरीब के घर में बच्चा कभी भी ''बच्चा'' पैदा नहीं होता, वह पहले ही ''बूढ़ा'' पैदा होता है। मैं वही ''बूढ़ा बच्चा'' हूँ।

❁❁

दिनकर के प्रति : वंशज का वक्तव्य.....

क्या कहा कि दिनकर डूब गया
दक्षिण के दूर दिशांचल में ?
क्या कहा कि गंगा समा गई
रामेश्वर के तीरथ जल में?

क्या कहा कि नगपति नमित हुआ
तिरुपति के धनी पहाड़ों पर ?
क्या कहा कि उत्तर ठिठक गया
दक्षिण के ढोल नगाड़ों पर ?

वह दिव्य भाल, उन्नत ललाट
दिपता था जिस पर सूर्य बिन्दु
वह धवल वेश, वह स्कंध वस्त्र
लिपटा था जिसमें अमल इन्दु

सुग्रीव शीश, वे वृषभ स्कंध
वह चट्टानों-सा वृक्ष प्रान्त
वह चलता फिरता हवन कुंड
वह हिन्दी का अद्‌भूत निशान्त

वे रक्त रचे जलते लोचन
वह भैरव स्वर, वह महाघोष
वे प्रबल प्रकम्पित पुष्ट ओष्ठ
वह अपनी वय का मुखर रोष

हे वचन समूची पीढ़ी का
हम तुम्हें नहीं मरने देंगे
इस आँगन में तम को तांडव
हम कभी नहीं करने देंगे।

तुम नहीं मरे हो निरवंशी
मैं साबित करने आया हूँ
बेशक अनाथ हूँ आज भले
तो भी दिनकर का जाया हूँ।

हे तीन लोक! चवदहों भुवन!
वक्तव्य सुनो इस वंशज का
दायित्व निबाहूँगा पूरा
मैं दिनकर जैसे पूर्वज का

आश्वस्त रहो हे पूज्य जनक।
वाणी में अंश तुम्हारा है
कुल, गोत्र भलेही हो कुछ भी
यहसारा वंश तुम्हारा है।

❁❁

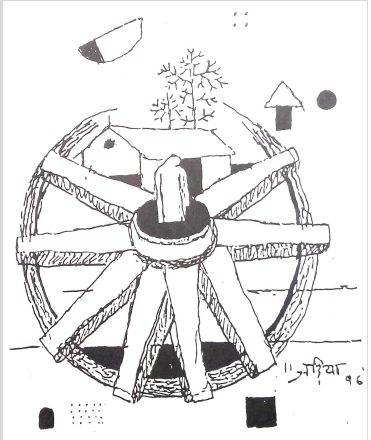

इन्कार करुँ तो कहना !

मुझे क़लम क्या दी दाता ने आग थमा दी हाथों में
अपने सपने आप जलाकर बैठा रहूँ अनाथों में
यूँ तो मेरे सपने जग में मृत्युंजय कहलाते हैं
यूँ तो अम्बर के पनिहारे मुझको भी ललचाते हैं

पर जब तक ये बारुद बिछी है केश खुले हैं वसुधा के
अगर कहीं मैं अम्बर का सिंगार करुँ तो कहना
जब तक मेरे हाथों में है.....

स्याही की दो बूँद क्या, ख़ुद से हुआ पराया हूँ
अमृत बाँट रहा हूँ घर-घर, विषधर घर ले आया हूँ
ये मेरा उपकार नहीं है, तिल भर भी एहसान नहीं
इसके बिना अधूरा हूँ मैं, लगते मुझमें प्राण नहीं

पर भूले से भी टूट गई यदि ये निर्जल एकादशी
अगर कहीं मैं जीने का कुविचार करुँ तो कहना
जब तक मेरे हाथों में है.....

ये पगडंडी, ये चौराहे, ये गलियाँ ये राजमहल
ये मधुवन, ये झर-झर झरने, ये कजरारे ताजमहल
कई अजानी उर्वशियों का रोज़ संदेशा लाते हैं
या तो गुपचुप कहते हैं या सिरहाने रख जाते हैं

पर जब तक है आँख तुम्हारी कुछ अकुलायी आँसू भरी
अगर कहीं मैं काजल से अभिसार करुँ तो कहना
जब तक मेरे हाथों में है.....

वे जो दो आँसू दिखते हैं लगते जग से न्यारे हैं
अजर-अमर हैं, अपराजित हैं, प्राणों से भी प्यारे हैं
जैसे बहती वेद ऋचाएँ, ठिठकी गऊएँ श्याम की
जिनके मुँह पर मुहर लगी है केवल मेरे नाम की

पर अब तक लछमन रेख बनी है और मिलन मजबूर है
अगर कहीं मैं प्रियतम की मनुहार करुँ तो कहना
जब तक मेरे हाथों में है.....

लाओ अपना दर्द पिलाओ समझो मेरी प्यास को
गया हुआ मत कभी समझना स्याही के विश्वास को
आँसू का अनमोल ख़ज़ाना दे दो मेरी झोली में
मस्त रहो अपनी मेंहदी में, पनघट में, रंगोली में

जब तक दर्द तुम्हारा मेरी नस-नस में मौजूद है
अगर कहीं मैं गीतों का व्यापार करुँ तो कहना
जब तक मेरे हाथों में है.....

❁❁

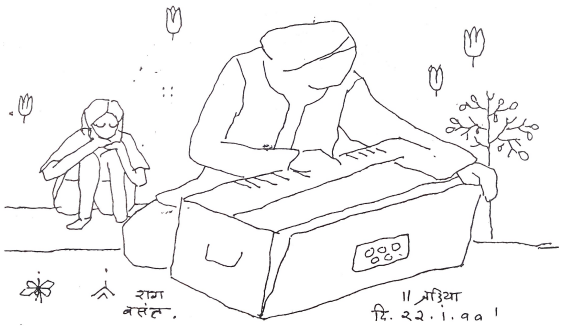

एक वसंत गीत - मदन राग

बाग बगीचे लाल गलीचे ऋतुराजा पैदल आया है
कली-कली को चूम रहा है - क्या सैभाग्य लिखाया है
ऋतुराजा पैदल आया है ।।

झर-झर झरते पीले पत्ते आशीषें देते कोपल को
सुख से रहना रानी बेटी सुरभित रखना राजमहल को
काले भँवरे रोज आयेंगे सरे आम तुझको चूमेंगे
पागल पुरवैया के झोंके तेरे आसपास घूमेंगे
क्या सौभाग्य लिखाया है - ऋतुराजा पैदल आया है।।

सौरभ अपना धर्म निभाती फूल-फूल से लिपट रही है
मादकता के इस मेले में काँटों तक से निपट रही है
पतझर ने इस पाण्डुलिपि की लिखी भूमिका मादक मन से
क्या मतलब होता वसंत का पूछो अपने मित्र मदन से
कच्ची असिया का रस पीने तोता भी पगलाया है
क्या सौभाग्य लिखाया है - ऋतुराजा पैदल आया है।।

जुही चमेली की बातों को समझोगे तो जानोगे
तितली में भी कई श्लेष हैं साँस खींच कर मानोगे
मदन राग को काली कोयल कितने मन से गाती है
रति पति के इस आलजाल को गा गाकर समझाती है
जब भी गाया इस पगली ने मदन राग ही गाया है
क्या सौभाग्य लिखाया है - ऋतुराजा पैदल आया है।।

महुआ अपनी मस्ती में लाल पलाशों से लड़ता है
मैं अपना रस टपकाऊँ तू लाल लाल क्यों पड़ता है
अपने तीनों पातों से चोटा-सा दोना बनवा ले
वासंती ऋतु चली जाएगी, छननी हो तो छनवाले
कितनी बार तुझे समझाऊँ बीस बार समझाया है
क्या सौभाग्य लिखाया है - ऋतुराजा पैदल आया है।।

सौरभ औ सौंदर्य लुटाना बिना किसी भी भेदभाव के
तितली भँवरे गुण गाते हैं रतिपति के राजा स्वभाव के
रंग रँगीली सबको लगती है यह अनंग की मादक रचना
इस रचना में सब रमते हैं नहीं किसी के बस में बचना
इसीलिये तो फागुन तम ने माथे पर बैठाया है
क्या सौभाग्य लिखाया है - ऋतुराजा पैदल आया है।।

❁❁

युग बीते....

युग बीते सम्वाद नहीं है,
कब बोले कुछ याद नहीं है।।
सपने सबके अलग-अलग हैं,
सपनों का अनुवाद नहीं है।।
सूरज से पहले उठ जाना,
मुर्गे का अपराध नहीं है।।
जब से घर का चूल्हा बदला,
पहले जैसा स्वाद नहीं है।।
अंधा सूरज अम्बर नापे,
तिल भर कहीं विवाद नहीं है।।
सातों सुर खामोश पड़े हैं,
कोई भी नौशाद नहीं है।।
खुद की जो भी करे आरती,
मिलता उसे प्रसाद नहीं है।।
दीवाली की हो गई होली,
शेष बचा प्रहलाद नहीं है।।
मिट्टी जिसका तन-मन-धन हो,
उसे कहीं अवसाद नहीं है।।
जाने को ही आये हम सब,
कोई भी अपवाद नहीं है।।
तुम अनादि हो तुम अनन्त हो,
यह कोई उन्माद नहीं है।।
कोई भी इस कोलाहल में,
सुनता अनहद नाद नहीं है।।
आज राम का स्वागत करने,
शबरी और निषाद नहीं है।।

❁❁

प्रताप सहगल के नए नाटक 'तीन गुमशुदा लोग' की प्रभावी प्रस्तुति

22 जनवरी, 2018 को प्रताप सहगल के नए नाटक का 'तीन गुमशुदा लोग' का मंचन श्रीराम सेंटर, नई दिल्ली में **अनुरंगना थियेटर ग्रुप** द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। नाटक का निर्देशन **अशरफ अली** का था।

'तीन गुमशुदा लोग', प्रताप सहगल की तीन कहानियों का कोलाज है। तीन कहानियाँ हैं – 'जुगलबंदी', 'क्रास रोड' और 'मछली मछली कितना पानी'। 'जुगलबंदी' में हिन्दी में आए एक अपढ़ प्रकाशक रूपसिंह महान और एक नए लेखक मनीष मोहन के बीच लेखक–प्रकाशक संबंधों की मानवीय पड़ताल कि गई है। प्रकाशक सांस्कृतिक रूप से विपन्न और भ्रष्ट है। अवसरवादी और काइयाँ। प्रकाशित होकर अपना विस्तार करने की चाहत ही मनीष मोहन को एक गुम होते लेखक के रूप में देखती है, जिससे वह आत्म–संघर्ष करके बाहर आता है।

दूसरी कहानी 'क्रास रोड', वेंकटरमण द्वारा की गई आत्महत्या के बहाने आत्महत्या के दर्शन को लेकर बौद्धिक–सामाजिक पड़ताल है। यहाँ अरुण गुम है, जो बहसों एवं तर्कों के आधार पर अपनी जीजिविषा को पुनः स्थापित करता है।

तीसरी कहानी 'मछली मछली कितना पानी' पढ़े–लिखे प्रोफेशनल समाज में पति–पत्नि के रिश्तों की पड़ताल करती है। कहानी का मुख्य पात्र मनोहर इस कहानी में अपने से गुम हुआ एक पात्र है। उसकी पत्नी प्रिया के संबंधों के बहाने यह कहानी प्रश्न उठाती है कि क्या सचमुच हम समाज में अपनी स्पेस जानते हैं? जैसे मछलियाँ नहीं जानती कि उनके हिस्से में कितना पानी है, उसी तरह से मनोहर और प्रिया भी नहीं जानते कि उनके हिस्से में कितनी स्पेस है। सामाजिक और व्यैक्तिक स्पेस की लड़ाई ही वस्तुतः ऐसी लड़ाई है, जिसका कोई सिरा आसानी से पकड़ में नहीं आता। अच्छी बात यह है कि तीनों कहानियों का अंत आशा की एक किरण के साथ ही होता है।

मंच का डिजाइन ऐसा कि एक ही मंच व्यवस्था ने तीनों कहानियों में अलग–अलग व्यक्तित्त्व धारण कर लिया। इसी तरह प्रकाश व्यवस्था का प्रभाव भी कौशल के साथ किया गया। संगीत ने प्रस्तुति के प्रभाव को गहराया तो नृत्य–संयोजन ने थियेटर की मूल्यवत्ता को कई गुणा बढ़ा दिया। इसे अशरफ अली के निर्देशकीय कौशल का ही कमाल मानना चाहिए कि एक कहानी से दूसरी कहानी के बीच संचरण बड़ी सहजता से होता चला गया। हर कहानी का अपना प्रभाव और फिर तीनों कहानियों का एक समग्र प्रभाव ही इसे एक यादगार प्रस्तुति के रूप स्थापित करता है।

अनुरंगना थियेटर ग्रुप की इस प्रस्तुति को दर्शकों का भरपूर स्नेह मिला। मनीष मोहन की भूमिका में नरेन्द्र कुमार, रूपसिंह महान की भूमिका में जितिन गौड़, अरूण की भूमिका में हिम्मत सिंह नेगी, संजना की भूमिका ज्योत्सना राजन, भूपेश की भूमिका में राजेश बख्शी तथा प्रिया की भूमिका में रति शर्मा ने अपने अभिनय से प्रभावित किया। वेंकटरमण की भूमिका में रवि तनेजा ने खूब रंग जमाया। शेष कलाकारों ने भी अपनी–अपनी भूमिकाओं को बखूबी निभाया।

■ **डॉ.प्रताप सहगल**
एफ–101, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली – 110027